भारतीय वन्यजीव विशेषज्ञों के अमेरिकी तजुर्बे

लॉरिंडा कीज लौंग

भारत के 13 वन्यजीव विशेषज्ञों ने वर्जीनिया से लेकर फ्लोरिडा के जलमार्गों और कोलोरैडो के पर्वतों तक की सैर की। वे एक-दूसरे से ही नहीं हिले-मिले बल्कि अपने अमेरिकी साथियों के भी दोस्त बन गए। इस दौरान उन्होंने प्राकृतिक स्थलों के संरक्षण के लिए अमेरिका के नवीनतम प्रयासों के बारे में जाना और अपने अनुभव बांटे। इनमें से दो विशेषज्ञों अश्विनी कुमार गुलाटी और गोविंद सागर भारद्वाज ने हमें इस रोमांचक यात्रा की तस्वीरें उपलब्ध कराईं।

भारत के 13 वन्य जीव संरक्षण विशेषज्ञों ने अमेरिका के राष्ट्रीय वन्य जीव उद्यानों की तीन सप्ताह तक सैर की। उन्होंने ह्वेलों को शिकार करते देखा, मगरमच्छों और तेंदुओं पर नजर डाली, दलदल में मच्छर मारे और रॉकी पर्वतमाला की चढ़ाई पर हिरण के दर्शन किए लेकिन उनके लिए अमेरिका के लोगों से मुलाकात कहीं अधिक यादगार बन गई।

एक विशेषज्ञ को यह देख कर हैरानी हुई कि बहुत-से अमेरिकी जीवन भर विवाहित रहते हैं और उनके बच्चे भी सुसंस्कृत होते हैं। दूसरे विशेषज्ञ घर का बना खाना खाने के बाद रसोईघर में स्वचालित कचरा निपटान प्रणाली देखकर दंग रह गए। अपने प्रोफेशनल रवैए, वन्य जीव संरक्षण के लिए उत्साह, प्राकृतिक वातावरण को बचाए रखने और उसका भरपूर आनंद उठाने के साथ उन्होंने अपने साथी अमेरिकी वन्य जीव विशेषज्ञों से खुद का जुड़ाव पाया।

ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क, हिमाचल प्रदेश के निदेशक संजीव पांडे कहते हैं, ''सभी कर्मचारी, यहां तक कि घरों पर शाम को खातिरदारी करने वाले हमारे मेजबान भी अपने काम के प्रति समर्पित थे और अपने काम की जगह से उन्हें बहुत लगाव था। मुझे भी अपने काम की जगह से लगाव है, इसलिए मुझे वे सभी लोग बहुत पसंद आए।'' यद्यपि पांडे को पर्याप्त शाकाहारी भोजन नहीं मिल सका लेकिन जैक्सनविले (फ्लोरिडा), डेनवर और कोलोरैडो में घरों में व्यतीत किया गया समय इतना अच्छा लगा कि भारत लौटकर उन्होंने अमेरिकी छात्रों की मेजबानी करने का निश्चय किया ताकि ''जो भारतीय मेजबानी का आनंद उठाना चाहें, वे ऐसा कर सकें।''

बाएं: फ्लोरिडा में ओकफेनोकी का राष्ट्रीय वन्यजीव क्षेत्र।

दाएं: ओकफेनोकी वन्यजीव क्षेत्र की पगडंडी पर भारत के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय की संयुक्त निदेशक (वन्यजीव) अल्का भार्गव, स्थानीय समन्वयक जैनिस ब्रुमोंड और हिमाचल प्रदेश के वन विभाग के अश्विनी कुमार गुलाटी।

ऊपर से बाएं घड़ी की दिशा में: फ्लोरिडा के वन्यजीव क्षेत्र में देखे जा सकने वाले वन्यजीवों में घड़ियाल, जलकौवे, तेंदुए, तितलियां और छिपकलियां शामिल हैं।

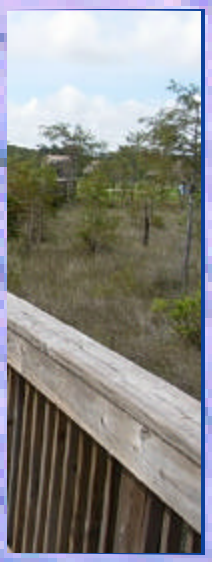

अमेरिकी पार्क रेंजर जोसेफ डार्लिंग फ्लोरिडा के बिग साइप्रस राष्ट्रीय उद्यान में लोगों की सुरक्षा और कानून पर अमल के लिए इस्तेमाल होने वाले हाइटेक हथियारों में से एक के साथ।

उन्हें ये व्यक्तिगत अनुभव, विचारों का आदान-प्रदान और तकनीकों के आदान-प्रदान का सुअवसर 24 सितंबर से 14 अक्टूबर 2005 तक वन्य जीव उद्यान प्रबंध तथा संरक्षण विषय पर अमेरिकी विदेश विभाग द्वारा आयोजित इंटरनेशनल विजिटर लीडरशिप प्रोग्राम के दौरान मिला। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय उच्चाधिकारियों तथा गैरसरकारी संस्थाओं के प्रमुख कार्यकर्ताओं को वन्य जीवों तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा के अमेरिकी तौर-तरीकों की जानकारी देना था। कार्यक्रम में वन्यजीव प्रजातियों के संरक्षण के लिए जैव आंकड़ों के संग्रह, पर्यावरण कानून बनाने एवं लागू करने और प्रकृति को बचाने में आम लोगों के सहयोग के लिए दोनों देशों के सरोकारों पर बल दिया गया। इस कार्यक्रम को आयोजित करने वाले अमेरिकी दूतावास, नई दिल्ली में कार्यक्रम अधिकारी एस. टोवन मैकडेनियल का कहना है, ''हम संपर्क बना रहे हैं, रिश्ते कायम रहे हैं और चीजें हो रही हैं।''

बहुत-से भारतीय प्रतिभागियों का कहना है कि वे राष्ट्रीय वन्यजीव उद्यानों की सुरक्षा के लिए अमेरिकी तरीके अपनाने पर विचार करेंगे और संरक्षण के लिए कार्यदल बनाएंगे। उत्तरांचल में उत्तरी कुमायूं, नैनीताल के वन संरक्षक सरगम सिंह रासेली कहते हैं, ''अगर ओकेफेनोकी में जरा भी गड़बड़ी होगी तो मैं समझता हूं कि हजारों लोग ई-मेल वगैरह से अपनी आवाज उठाएंगे।'' ओकेफेनोकी फ्लोरिडा राज्य में स्थित दलदल भरा राष्ट्रीय वन्य जीव अभयारण्य है जिसकी यात्रा इन विशेषज्ञों ने नाव से की। वे भारत में भी इस विचार को लागू करना चाहते हैं। उनका कहना है, ''ऐसा इसलिए कि जब आप मेरे वन्य जीव संरक्षण उद्यान में आएं तो आप उसका हिस्सा बन जाएं। वहां अगर कुछ गलत हो रहा है तो कृपा करके आवाज उठाइए और बताइए कि क्या गलत हो रहा है।'' रासेली को अमेरिकी वन्य जीव उद्यानों के कार्यकर्ताओं, अनुसंधानकर्ताओं और रेंजरों की वे दर्जनों मशविरे भी बहुत पसंद आए जिनमें उन्होंने बताया कि ''उद्यान के हित में जो भी निर्णय लिया जाता है वह शोध के आधार पर लिया जाता है। कोई भी दस्तावेज या प्रबंध योजना जनमत को ध्यान में रख कर तैयार की जाती है।''

इस यात्रा से लौटने के बाद पांडे का अनुभव कुछ इस तरह है: ''वन्य जीव संरक्षण से जुड़ी मेरी समस्याओं में अमेरिका की तुलना में थोड़ा नहीं, बहुत अंतर है। वहां भारत की तुलना में कहीं अधिक वन हैं जबकि जनसंख्या यहां की केवल एक-तिहाई है। भारत में वनों का मतलब है लोगों की जीविका, जबकि अमेरिका में लोग वहां आराम करने और सप्ताहांत बिताने के लिए जाते हैं।''

अश्विनी कुमार गुलाटी को वहां और यहां में बहुत समानताएं दिखाई दीं। वे हिमाचल प्रदेश वन विभाग में एडिशनल प्रिंसिपल चीफ कंजर्वेटर (वन तथा वन्यजीव) हैं। वह कहते हैं, ''हम यह जानने को उत्सुक थे कि अमेरिका में वन विज्ञान के क्षेत्र में क्या काम किया जा रहा है और हम इसकी तुलना वन विज्ञान से जुड़े अन्य लोगों से कर रहे थे कि वे अपनी समस्याओं को कैसे हल करते हैं। एक ही तरह के प्रश्नों के जवाब हम भी उन्हीं की तरह देते हैं। लेकिन, एक बड़ा अंतर यह है कि अमेरिकी अधिकारी इस बात का अधिक ध्यान रखते हैं कि वनों और वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए वे लोगों की मदद कैसे लें। दूसरी ओर, भारतीय वन अधिकारी प्राय: इस बात पर अधिक ध्यान देते हैं कि वन्यजीवों से लोगों की सुरक्षा कैसे की जाए और वनों को तमाम अवैध कब्जों से कैसे बचाया जाए। वह याद करते हैं, ''मेरे विचार से फ्लोरिडा के नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम के तितली उद्यान में हर 10 कदम की दूरी पर स्वयंसेवक रहता है और जानकारी देने वाली पुस्तिका पकड़ा देता है।'' भ्रमण पर आए ज्यादातर प्रतिभागियों को भी यह अच्छी तरह याद है कि हर जगह कितने प्यार से कितनी सारी पुस्तिकाओं, फिल्मों, नमूनों तथा अन्य स्रोतों के बारे में बताया जाता है ताकि लोगों को अधिक से अधिक जानकारी मिल सके और उन्हें इस बारे में शिक्षित किया जा सके।

जेनिस ब्रुमोंड ने कोलोरैडो, फ्लोरिडा, वर्जीनिया और वाशिंगटन डी.सी. के 15 वन्य जीव उद्यानों (पार्कों) और संरक्षण क्षेत्रों में अतिथियों को घुमाया। वह कहती हैं कि भारतीय प्रतिभागियों को अमेरिका के प्राकृतिक संसाधन प्रबंध की कई परस्पर विरोधी नीतियों के बारे में जान कर बड़ा आश्चर्य हुआ जैसे सार्वजनिक वनों में चराई, पेड़ गिराना (लॉगिंग) तथा खनन का काम। सभी

भारतीय विशेषज्ञ (दाएं) वर्जीनिया के जॉर्ज वाशिंगटन राष्ट्रीय वन क्षेत्र में। यहां एक स्वयंसेवी समूह ने शैक्षिक पट्टिकाएं लगाई हैं (बाएं)।

अमेरिकियों को व्यावसायिक वन्यजीव उद्यान भी बहुत लुभाते हैं। मियामी का तोता जंगल द्वीप और हत्यारी ह्वेलों के प्रदर्शन वाला सीक्वेरियम पार्क इनमें शामिल हैं।

अतिथियों ने यात्रा के दौरान मिले ब्रुमोंड के स्नेह भरे व्यवहार की प्रशंसा की हालांकि उन्होंने खरीददारी या मनोरंजन का पर्याप्त समय नहीं मिलने की बात भी कही। ब्रुमोंड चाहती थीं कि प्रतिभागी छोटे से व्यस्त कार्यक्रम में जो कुछ भी दिखाना और बताना संभव हो, उसे देख और सीख सकें।

प्रकृति के प्रति अमेरिकी लोगों के गहरे सरोकार और साथ ही प्राकृतिक संसाधनों के दुरूपयोग जैसे विरोधाभास की ओर भी कई भारतीय प्रतिभागियों का ध्यान गया। पांडे कहते हैं, ''अधिकांश समय हमने देखा, हमारी ही बस हम 15 लोगों को सैर करा रही है अन्यथा सभी लोग अकेले अपनी कार चला रहे थे। हमें पता लगा कि सरकार तो कार शेयर करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है लेकिन लोग हैं कि समझना ही नहीं चाहते। मैं नहीं जानता यह जीवनशैली कब तक चलेगी क्योंकि जीवाश्म ईंधन तो सदा रहेंगे नहीं....भारत में भी अमीर लोग ऐसा ही करते हैं।''

उत्तरांचल के रासेली के विचार थोड़े अलग हैं। वह कहते हैं, ''मैं सोचता हूं कि अमेरिकी लोग न केवल अपने देश बल्कि पूरी दुनिया की चिंता करते हैं- जैसे, गेंडे के संरक्षण के लिए उनका समर्थन जबकि अमेरिका में गेंडे होते ही नहीं।'' उन्होंने कहा, स्वच्छता पर उनका बहुत ध्यान रहता है। न केवल वन्यजीव उद्यानों की स्वच्छता बल्कि पूरे देश की स्वच्छता पर। उन्होंने इसके लिए काम आ रहे संसाधनों पर भी ध्यान दिया। जब भी वे चाय पीते तो दूसरा थ्रो-अवे प्लास्टिक कप तैयार रहता और चाय प्लास्टिक की थैली में दी जाती। वह कहते हैं, ''लेकिन ये चीजें गलियों में नहीं फेंक दी जातीं। हम भले ही कम चीजों का उपयोग करते हैं लेकिन वे गलियों में फेंक दी जाती हैं जिससे जमीन पर गंदगी फैलती है।''

रासेली को प्लेटों में छोड़ी गई जूठन के हश्र को देखकर आश्चर्य हुआ जिसे उन्होंने डेनवर, कोलोरैडो में सभी प्रतिभागियों के साथ एक परिवार के यहां खाना खाते समय देखा। वह याद करते हुए मजाकिया लहजे में स्वचालित कचरा निपटान मशीन का वर्णन करते हैं। ''मैंने अपनी मेजबान श्रीमती बिडिंगर की मदद के लिए पहल की लेकिन उन्हें बिल्कुल साफ-सुथरा बचा हुआ भोजन सिंक में फेंकते देखकर मैं हैरान रह गया। और फिर, उन्होंने एक बटन दबाया। सिंक ने सारा बचा-खुचा खाना निगल गया। वह कहां गया? यह तो श्रीमती बिडिंगर को भी नहीं पता था, न उन्हें इसकी परवाह थी।'' अमेरिकी रसोईघरों में इस तरह की मशीनें अब आम हैं।

रणथंभौर, राजस्थान में उप वन संरक्षक तथा डिप्टी फील्ड डायरेक्टर गोविंद सागर भारद्वाज के लिए यह जानना बहुत महत्वपूर्ण था कि अमेरिका में उनकी तरह के वन्य जीव अधिकारी शेर-बाघों की देखभाल कैसे करते हैं। वह कहते हैं, ''यूनिवर्सिटी में एक व्याख्यान सुनते समय उन्हें पता लगा कि फ्लोरिडा के तेंदुए 'प्युमा' की संख्या जब घट कर केवल 20 से 40 के बीच रह गई तो टेक्सास से प्रजनन के लिए मादा प्युमा लाई गई। उस पर टैग लगाया गया और 10 वर्ष के भीतर उनकी संख्या 80 से 100 तक हो गई। यह बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से किया गया जो शेर कुल के किसी भी प्राणी की आबादी बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। हमारे देश में भी इस विधि को अपनाया जा सकता है। हमें नहीं पता, हमारे बाघों और उनके शावकों को क्या हो रहा है।'' उनका विचार है कि हो सकता है राजस्थान के बाघों की समस्या भी ठीक फ्लोरिडा के तेंदुए के समान ही हो। ''वे साथी की तलाश में भटक रहे हों।'' मतलब, यह कि जब युवा नर को मादा नहीं मिलती तो वे वन्य जीव उद्यान की सुरक्षा छोड़कर नई जगह मादा की तलाश में निकल सकते हैं। वह कहते हैं, ''अगर हम रेडियो टैगिंग करें और वैज्ञानिक विधियों से उनकी खोजबीन करें तो हमें पता लग सकता है कि हमारे बाघों को क्या हो रहा है।'' वे और उनके साथी शेर-बाघों के संरक्षण के लिए प्रशिक्षित कुत्तों और उपग्रहों के इस्तेमाल के प्रदर्शन को देखकर बहुत खुश हुए।

> भारत के वन्यजीव विशेषज्ञों ने अपनी तीन हफ्ते की यात्रा में बहुत कुछ सीखा। उनमें से कई अपने खास अनुभवों को भारत के वन क्षेत्रों के संरक्षण में आजमाने को उत्सुक हैं।

उत्तरांचल में कॉर्बेट संरक्षण क्षेत्र के निदेशक राजीव भरतारी कहते हैं कि ''लगता है कि अमेरिकी संरक्षण प्रणाली में पशु चिकित्सा संबंधी देखरेख में भी उतने ही कार्यकर्ता रखे जाते हैं जितने भू-क्षेत्रों के बचाव में। साथ ही अमेरिकी अधिकारियों के पास ऐसे हथियार और तकनीकें थीं जिनसे बिगडैल जानवरों को उनकी जान लिए बिना ही नियंत्रण में लाया जा सकता है। वह कहते हैं, ''वन्य जीव उद्यानों के प्रबंधकों की अपनी भाषा होती है। उनमें से किसी एक से बात करना अपने-आप से बात करने के समान ही था।'' □